# अनमोल वचन

**हर्षित गर्ग**

*कक्षा- 9 (सेंट गैब्रिएल एकेडमी)*

* पहाड़ से गिरकर मनुष्य उठ सकता है, परन्तु चरित्र से गिरा मनुष्य नहीं उठ सकता।
* विपत्ति से बढ़ कर अनुभव देने वाला कोई विद्यालय आज तक नहीं खुला।
* समस्या मनुष्य पैदा करे और समाधान के लिए ईश्वर को पुकारे, यह उचित नहीं है।
* जैसे एक छोटे दीपक की रोशनी बहुत दूर तक फैलती है उसी प्रकार इस बुरे संसार में भलाई बहुत दूर तक चमकती है।
* माया ईश्वर की शक्ति है, फिर भी एक अनिर्वचनीय पदार्थ है।
* जहाँ नदी गहरी होती है, वहाँ जल प्रवाह अत्यन्त शान्त एवं गम्भीर होता है।
* कुछ छोड़ना चाहते हो तो पाप व अत्याचार करना छोड़ो।
* कुछ करना चाहते हो तो दुःखियों की सहायता करो।
* चित्त की वृत्तियों को वश में रखना ही योग है।
* विद्वान वह व्यक्ति है जो अपने ज्ञान के अनुसार अनुकरण करते हैं।
* निन्दा अपने घटियापन को दर्शाती है इससे दूसरा छोटा नहीं बड़ा हो जाता है।
* शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को ऐसा बनाना है कि वह अपने जीवन को पूर्ण तथा सफल बना सके।
* सर्घष के बिना जीवन नीरस हो जाता है।
* आत्म ज्ञान, आत्म-विश्वास और आत्म संचय केवल यही तीन जीवन को बल एवं शक्ति प्रदान करते हैं।
* मस्तिष्क को अध्ययन की उतनी ही आवश्यकता है जितनी शरीर को व्यायाम की।
* ज्ञानी अपने गुण-दोष देखता है। अज्ञानी 'पर' के गुण दोष देखता है।
* अहकांर का त्याग सबसे बड़ा त्याग है।
* अपनी अज्ञानता का आभास हो जाना ही ज्ञान का प्रथम सोपान है।
* घास पृथ्वी पर अपने सहचरों की खोज करती है किन्तु वृक्ष आकाश में एंकात का अनुसंधान करते हैं।